तृतीय अध्याय

शोध प्रविधि

तृतीय अध्याय
शोध प्रविधि

भूमिका :-

किसी भी शोधकर्ता को अपने शोधरूपी भवन को बनाने के लिये न्यादर्शरूपी आधारशिला की आवश्यकता होती है। क्योंकि आधारशिला जितनी मजबूत होगी शोधकार्य उतना सुदृढ़ होगा। आधुनिक युग में अधिकांश शोधकार्य प्रतिचयन विधि अथवा निर्देशन रीति द्वारा किये जाते है। सांख्यिकी का विश्वास है कि किसी भी क्षेत्र में वैज्ञानिक ढ़ंग से चुनी गयी न्यादर्श इकाईयों में वे सभी विशेषतायें पायी जाती है, जो सम्पूर्ण जनसंख्यायें अन्तर्निहित होती है। न्यादर्श जितने सुदृढ़ रहेगे उतने ही परिणाम विश्वसनीय और परिशुद्ध होंगे।

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध के इस अध्याय में मुख्यतः न्यादर्श चयन, शोध में प्रयुक्त उपकरण, शोध के चर, प्रदत्तों का संकलन एवं प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियों का वर्णन किया गया है।

न्यादर्श चयन :-

शोधकर्ता द्वारा अपने शोधकार्य में सोद्देश्य (ऐच्छिक) पद्धति से गुजरात राज्य के बड़ौदा जिले के सावली तहसील की 239 प्रारम्भिक विद्यालयों में से 10 प्रारंभिक विद्यालयों के 200 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। एक विद्यालय में से 20 विद्यार्थियों को लिया गया है, जिसमे में 10 विद्यार्थियों स्वाध्यायकार्य वाले एवं 10 विद्यार्थियों बिन स्वाध्यायकार्य वाले है। जिसका प्रदत्त निम्न सारणी में है।

क्र.	स्कूल	स्वाध्यायी विद्यार्थी	बिन स्वाध्यायी विद्यार्थी	कुल विद्यार्थी
1.	सांठासाल	10	10	20
2.	छालीयेर	10	10	20

3.	राजुपूरा	10	10	20
4.	शिहोरा	10	10	20
5.	वरसड़ा	10	10	20
6.	मेवली	10	10	20
7.	सावली	10	10	20
8.	परथमपुरा	10	10	20
9.	डेसर	10	10	20
10.	सावली (जय हिन्द)	10	10	20
	योग	**100**	**100**	**200**

शोध में प्रयुक्त चर :-

अनुसंधान प्रक्रम में परिकल्पना की रचना के पश्चात् संबंधित घटना के कारकों के अनुभाविक अध्ययन की आवश्यकता होती है। इसके लिये घटनायें संबंधित पूर्वगामी कारकों के स्वरूप को स्पष्ट समझना होता है। इनके अतिरिक्त सामाजिक विज्ञानों से संबंधित घटना को प्रभावित करने वाले मुख्य बाह्य कारकों को भी जानना वैज्ञानिक अध्ययन के लिये नितान्त महत्वपूर्ण होता है। संप्रत्ययात्मक स्पष्टता तथा मात्रात्मक विशुद्धता के आधार पर वैज्ञानिक अनुसंधान में ऐसे कारकों को ही चर की संज्ञा दी जाती है।

- **स्वतंत्र चर** –स्वाध्याय कार्य (आध्यात्मिक प्रवृत्ति)
- **आश्रित चर–** शैक्षिक उपलब्धि

  व्यक्तित्व कारकों

  समायोजन

शोध में प्रयुक्त उपकरण :-

किसी भी शोध कार्य में उपकरणों का बहुत महत्व होता है। क्योंकि इन उपकरणों के माध्यम से ही आवश्यक आंकड़े एकत्रित किये जाते है। उपकरणों का चयन एवं उपयोग बड़ी सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। जिसमें परिणाम की विश्वसनीयता पर सन्देह न किया जा सके।

प्रस्तुत शोध कार्य में उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए आंकड़ों का संग्रह करने के लिये निम्नलिखित उपकरण का उपयेाग किया गया है।

बालक व्यक्तित्व मापन प्रश्नावली :-

व्यक्तित्व मापन प्रश्नावली का निर्माण एस.डी. कपूर एवं शारदाम्बा राव ने किया है। इस प्रश्नावली के फार्म 'A' और 'B' का उपयोग किया है। फार्म 'A' के दो भाग A1 और A2 में कुल मिलाकर 70+70 = 140 प्रश्न है। उसी तरह फार्म 'B' के दो भाग B1 और B2 में कुल मिलाकर 70+70=140 प्रश्न है। इस प्रश्नावली में जो प्रश्न है उसके जवाब से बच्चों में व्यक्तित्व कारकों का विकास कितना हुआ है उसका मापन किया जाता है। व्यक्तित्व कारक 14 है। इसका विवरण निम्न प्रकार है :-

व्यक्ति विशेषकों के लक्षण

निम्न आंक वर्णन	उच्च आंक वर्णन
गाम्भीर्य, शुष्क, निलिप्त, तटस्थ	बेधडक, मिलनसार, सहृदय, सहभागी
बी (B)	
बौद्धिक हिनता, मूर्त चिन्तक	बौद्धिक उच्चत्व, कुशाग्र, अमूर्त चिन्तक
सी (C)	
संवेगात्मक अस्थिरता, भावना उत्प्रेरित, विचालित	संवेगात्मक स्थिरता, यथार्थपरक, शान्तचित, प्रौढ़ता

डी (D)	
भावशन्य, अप्रमाणित अकर्मण्य, निष्क्रिय, दार्शनिक आत्मसंतुष्ट, ईमानदारी, आलसी	अस्तित्वपान, अधिक क्रियाशील अधीर, समझदार, सतर्क, ईष्यावान अधिक उत्तेजित
ई (E)	
विनम्र, मृदु, समायोजनशील परम्परानुकूल	हठी, अडियल, आक्रमक, स्वतंत्र विचारक
एफ (F)	
संयमी, विवेकशील, गम्भीर, अल्पभाषी	मस्तमौला, आवेगपूर्ण, उत्साही, प्रसन्न
जी (G)	
निजहित साधक, नियम विहिन, संकीर्ण–कृतज्ञता	कर्तव्यनिष्ठ, नियमबद्ध संकल्पित, संतुलित
एच (H)	
संकोची, डरपोक, आत्म सशर्या, स्वयं सीमित	साहसी निर्भीकं, व्यक्त, प्रतिउत्पन्नमति
आई (I)	
दृढ़ता, आत्मविश्वास विवेकपूर्ण, यथार्थवादी	संवेदनशील, भावुक, परावलम्बी संरक्षणकामी
जे (J)	
उत्साही, स्वादयुक्त पदार्थ चाहने वाला, सामुहिक क्रियाशील, समूह में रहनेवाला, सामान्य स्वर को ग्रहण करना	सतर्क, जाग्रत, चौकना, आंतरिक रूप से कार्य करना, स्वयं में लीन रहना, उदासीन
एन (N)	
निष्कपट, सरल, आडम्बरहीन, भावनामय	समझदार, हिसाबी, दुनियादार, मर्मज्ञ
ओ (O)	
शान्तिप्रिय, आत्मविश्वासी, आश्वस्त, धीर	आशंकायुक्त, चिन्तित, विशादयुक्त, उध्वेलित

Q3	
असंयमित, अर्न्तद्वन्द्व आत्मप्रेरित, आचारविहीन	संयमित, आत्मछवि अनुसरण, सामाजिकता
Q4	
आनन्दमय, प्रशान्त, नैराश्य विहीन	तनावपूर्ण, अतिव्यग्र, नैराश्यपूर्ण

किशोर बालक/बालिका समायोजन मापनी :-

शोधकर्ता ने अपने शोधकार्य में बच्चों के समायोजन मापन के लिये इस मापनी का उपयोग किया है। श्रीमती रागिनी दुबे ने इसका निर्माण किया है किशोर बालक समायोजन मापनी में कुल मिलाकर 80 विधान दिये गये है। उस विधानों के सामने 'हाँ' और 'नहीं' दो विकल्प दिये गये है उसमें से सहमत विधान के समाने (✓) का निशान करना है और असहमत के सामने (✓) का निशान करना है। इस मापनी में स्व. समायोजन के 40 एवं समूह समायोजन के 40 विधान है इस मापनी को पूर्ण करने के लिये कोई समय मर्यादा नहीं है।

शैक्षिक उपलब्धि :-

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की जानकारी प्राप्त करने हेतु कक्षा 6वीं के वार्षिक परीक्षा के अंकसूची से प्रतिशत अंकों को लिया गया है।

प्रदत्तों का संकलन :-

प्रस्तुत शोध हेतु प्रदत्तों का संकलन माह जनवरी 2005 में गुजरात के बड़ौदा जिले के सावली तहसील के 10 विद्यार्थियों में जाकर एक सप्ताह में किया गया। प्रदत्त संकलन के लिये शोधकर्ता ने संस्थान के प्रमुख प्राचार्य से अनुमति ली। उसके बाद अध्ययनकर्ता ने संस्थान में अध्ययनरत विद्यार्थियों को वर्गखण्ड में जाकर 10 स्वाध्यायकार्य वाले एवं 10 बिन स्वाध्यायकार्य वाले बच्चों को अलग बिठाकर बालक व्यक्तित्व मापन प्रश्नावली 'A' और उसकी उत्तर पत्रिका दी और उसमें आवश्यक जानकारी भरने के निर्देश दिये गये। उसको

भरने के लिये 'I' घण्टे का समय दिया गया। उसी तरह फार्म 'B' को भी दिया गया। और समय के अनुसार सभी बच्चों ने उत्तर पुस्तिका पूर्ण कर ली और बच्चों से उत्तरपुस्तिका को वापस ले लिया गया। उसी तरह बालक/बालिका समायोजन मापनी वितरित की। जिसमें आवश्यक जानकारी भरने के लिये विद्यार्थियों को निर्देश दिये गये। और इसके लिये 30 मिनिट का समय दिया गया। जब विद्यार्थियों ने मापनी पूर्ण कर ली तब उससे वापस ले लिया गया। शैक्षिक उपलब्धि के आंकड़ों को प्राप्त करने के लिये शोधकर्ता ने संस्थान के कर्मचारी से बात करके उसके द्वारा रजिस्टर में से कक्षा 6वीं के बच्चों के वार्षिक परिणाम को लिया गया। क्योंकि कक्षा छठवीं में सभी के लिए समान परीक्षा होती है जो डाईट द्वारा ली जाती है। इस प्रकार अध्ययन से संबंधित प्रदत्त संकलन किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ :-

शोध समस्या से संबंधित संकलित प्रदत्तों के सारणीयन करने के उपरान्त उनसे उचित परिणाम प्राप्त करने के लिये उपयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने उचित परिणाम प्राप्त करने के लिये, दो समूह के मध्य अन्तर की सार्थकता 'टी' परीक्षण माध्यम से ज्ञात किया गया है।

****

Regional Institute of Education LIBRARY